कविता

जिज्ञासा

सुनील कुमार गौड़*

मैं हूँ ‘‘जिज्ञासा’’!
कुछ ‘‘करने’’ की आशा।

मुझमें है आशा,
सोचने की,
चिंतन-मनन करके,
आगे बढ़ने की आशा।

बच्चों में पाया जाता,
मेरा ये सद्गुण उत्कृष्ट,
तभी तो बच्चे करते,
“क्या?”, “क्यों?” और “कैसे?” के सवाल।

शांत करो उनकी जिज्ञासा,
आगे बढ़ने दो उनको,
इसी से देखते हैं वो सपने,
इसी से करते हैं ‘‘कल्पना’’,
इससे ही वे ‘‘सीखते’’ जाते,
इससे ही वे बढ़ते आगे।

मरने मत दो जिज्ञासा को तुम,
जीवित रखो हमेशा इसको,
यदि बनना हो ज्ञानवान,
विज्ञानवान और बुद्धिमान,

तो, इसे जगाए रखो तुम,
इसे बचाए रखो तुम,
यदि कायम रहेंगी जिज्ञासा,
तो बढ़ती रहेगी जीवन आशा।

करते रहेंगे हम ज्ञानार्जन,
करते रहेंगे ‘‘नवीन सृजन’’।।

*प्रधानाचार्य, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मेहूँवाला खालसा देहरादून 248125, उत्तराखंड